गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः।ब्रह्मणस्पतिः, १-१० बृहस्पतिः, १२ इन्द्राब्रह्मणस्पती। जगती, १२, १६ त्रिष्टुप्

**सेमामविड्ढि प्रभृतिं य ईशिषेऽया विधेम नवया महा गिरा।**
**यथा नो मीढ्वान्स्तवते सखा तव बृहस्पते सीषधः सोत नो मतिम्॥ २.०२४.०१**

यः। ईशिषे- परमैश्वर्यं वहसि। स त्वम्। इमां- एतम्। प्रभृतिं- निर्वाहम्। आविड्ढि- प्राप्नुहि। अया- अनया। नवया- अभिनवया। महा- महत्या। गिरा- वाचा। विधेम- परिचरेम। यथा। नः- अस्माकम्। मीढ्वान्- आनन्दकरः। तव- ते। सखा। स्तवते- स्तौति। तथा। बृहस्पते- मेधाधिदैवत। सः- तादृशः सन्। नः- अस्माकम्। मतिम्। सीषधः- साधय ॥१॥

**यो नन्त्वान्यनमन्न्योजसोतादर्दर्मन्युना शम्बराणि वि।**
**प्राच्यावयदच्युता ब्रह्मणस्पतिरा चाविशद्वसुमन्तं वि पर्वतम्॥ २.०२४.०२**

यः। ओजसा- तेजसा। नन्त्वानि- नमनीयानि। नि- नितराम्। अनमत्- अनमयत्। उत- अपि च। मन्युना- स्वमननशक्त्या। शम्बराणि- मेघोपलक्षितजडान्। वि अदर्दः- व्यदारयः। ब्रह्मणस्पतिः- मेधाधिदेवता। अच्युता- च्यावयितुमशक्यानपि। प्र- प्रकर्षेण। अच्यावयत्। वसुमन्तं- चिद्रश्मिसम्पन्नं मूलशक्तिधारासम्पन्नम्। पर्वन्तं- जडप्रतीकगिरिं मेघं वा। च। वि अविशत्- भिन्दन् प्रविवेश ॥२॥

**तद्देवानां देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन्दृळ्हाव्रदन्त वीळिता।**
**उद्गा आजदभिनद्ब्रह्मणा वलमगूहत्तमो व्यचक्षयत्स्वः॥ २.०२४.०३**

देवानां देवतमाय- देवाधिदेवस्य ब्रह्मणस्पतेः। तत्। कर्त्वं- कर्म। दृळ्हा- दृढानि पर्वतादीनि बन्धनानि जडप्रतीकभूतानि। अश्रथ्नन्- विश्लिष्टान्यभवन्। वीळिता- दृढानि। अव्रदन्त-

Dr. Rangaji

WEBOLIM

मृदून्यभवन्। गाः- चिद्रश्मीन्। उत् आजत्- उदगमयत्। ब्रह्मणा- मेधया मन्त्रेण वा। वलं- आवरणम्। अभिनत्- बिभेद। तमः- अन्धकारम्। अगूहत्- ज्योतिषा व्यपोहयत्। स्वः- प्रकाशम्। व्यचक्षत्- विशेषेण अपश्यत्॥३॥

**अश्मास्यमवतं ब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभि यमोजसातृणत्।**
**तमेव विश्वे पपिरे स्वर्दृशो बहु साकं सिसिचुरुत्समुद्रिणम्॥ २.०२४.०४**

अश्मास्यं- जडावृतम्। मधुधारं- रसम्। यम्। ब्रह्मणस्पतिः। ओजसा- स्वतेजसा। अवतं- यथा अवतारयति तथा। अतृणत्- अहिंसीत्। वृष्ट्यर्थं विमोचितवान्। मोक्षाय हिंसा आवश्यक्येव। अतस्ततनूर्न तदामो अश्नुत इति। विश्वे- सर्वे। स्वर्दृशः- क्रान्तदर्शिनः। तं- अमुं सोमं रसम्। एव। पपिरे- अनुभवन्ति। बहु- प्रभूतम्। समुद्रिणं- हृत्समुद्रसम्बन्धिनम्। साकं- युगपदेव। सिसिचुः- सिञ्चन्ति संस्कुर्वन्तीति भावः॥४॥

**सना ता का चिद्भुवना भवीत्वा माद्भिः शरद्भिर्दुरो वरन्त वः।**
**अयतन्ता चरतो अन्यदन्यदिद्या चकार वयुना ब्रह्मणस्पतिः॥ २.०२४.०५**

वः- युष्मभ्यम्। सना- सनातनानि। ता- तानि। का चित्- कानिचिद्ब्रह्मणस्पतेः प्रज्ञानानि। भुवना- भुवनानामुदकानाम्। भावीत्वा- भाव्यानाम्। दुरः- द्वाराणि। माद्भिः शरद्भिः- काले। वरन्त- उद्घाटयन्ति। या- यानि। वयुना- प्रज्ञानानि। ब्रह्मणस्पतिः। चकार- अकरोत्। तैः। अयतन्ता- अयत्नेन। अन्यदन्यत्- पृथक् पृथक्। चरतः- द्यावापृथिव्यौ चरतः॥५॥

**अभिनक्षन्तो अभि ये तमानशुर्निधिं पणीनां परमं गुहा हितम्।**
**ते विद्वांसः प्रतिचक्ष्यानृता पुनर्यत उ आयन्तदुदीयुराविशम्॥ २.०२४.०६**

पणीनाम्- भौमधनैकलक्ष्यबुद्धिभिः। गुहा हितम्- पिहितम्। परमम्- श्रेष्ठम्। निधिम्- चिद्रश्मिसमूहम्। तम्। ये। अभिनक्षन्तः- अभिगच्छन्तः। अभि- आभिमुख्येन। आनशुः-

Dr. Rangaji
WEBOLIM

व्याप्नुवन्ति। ते। विद्वांसः- ज्ञानिनः। अनृता- मिथ्याः। प्रतिचक्ष्य- दृष्ट्वा। आविशम्- प्रवेष्टुम्। यतः- यस्मात् स्थानात्। आयन्- भीता बहिरागताः। तत् स्थानम्। पुनः। उदीयुः- इन्द्रबृहस्पतिसाहाय्यवन्त उदगच्छन्॥६॥

**ऋतावानः प्रतिचक्ष्यानृता पुनरात आ तस्थुः कवयो महस्पथः।**
**ते बाहुभ्यां धमितमग्निमश्मनि नकिः षो अस्त्यरणो जहुर्हि तम्॥ २.०२४.०७**

ऋतवानः- प्रकृतिनियतिभूतसत्ययुक्ताः। कवयः- क्रान्तदर्शिनः। अनृता- मिथ्याः। प्रतिचक्ष्य- दृष्ट्वा। पुनः। अतः- अस्मात् स्थानात्। महस्पथः- महामर्गम्। आ तस्थुः। सः- असावग्निः। अरणः- शरणभूतः। नकिः अस्ति- पूर्वं तत्र नासीत्। ते- अमी ऋषयः। बाहुभ्याम्- स्वबाहूपलक्षितशोभनकर्मणा। धमितम्- उत्पादितम्। तम्- अमुम्। अग्निम्- पावकं सर्वभूतहितक्रतुम्। अश्मनि- जडप्रतीके पाषाणे। जहुः- जडोन्मुखभावनदहनार्थं विसृष्टवन्तः। हि- खलु॥७॥

**ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिर्यत्र वष्टि प्र तदश्नोति धन्वना।**
**तस्य साध्वीरिषवो याभिरस्यति नृचक्षसो दृशये कर्णयोनयः॥ २.०२४.०८**

ऋतज्येन- प्रकृतिनियतिभूतसत्याख्यज्यायुक्तेन। धन्वना- धनुषा। क्षिप्रेण- वेगवता। ब्रह्मणस्पतिः- मेधाधिदेवता। यत्र- यत्। वष्टि- कामयते। तत्। प्र- प्रकर्षेण। अश्नोति- अनुभवति। नृचक्षसः- क्रान्तदर्शिनः। तस्य- ब्रह्मणस्पतेः। दृशये- दर्शनाय प्रस्थिताः। कर्णयोनयः- श्रुतिभूताः। साध्वीः- सात्त्विकाः। याभिः। अस्यति- ब्रह्मणस्पती रक्षांसि नाशयति। ता इषवः॥८॥

**स संनयः स विनयः पुरोहितः स सुष्टुतः स युधि ब्रह्मणस्पतिः।**
**चाक्ष्मो यद्वाजं भरते मती धनादित्सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृथा॥ २.०२४.०९**

Dr.Rangaji

WEBOLIM

सः- असौ। ब्रह्मणस्पतिः। संनयः- सङ्गमय्य नेता। विनयः- विविच्य नेता। पुरोहितः- प्रत्यक्षहितः। सुष्टुतः- सुष्ठु स्तुतः। युधि- युद्धे शत्रुबाधकः। चाक्ष्मः- सूक्ष्मदर्शी सहनशीलः। वाजम्- गतिम्। मती- मननम्। धना- सम्पदः। भरते- धरति। आदित्- अनन्तरमेव। तप्युतुः- तापकः। सूर्यः- आत्मसूर्यः। वृथा- अनायासेन। तपति ॥९॥

**विभु प्रभु प्रथमं मेहनावतो बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या।**
**इमा सातानि वेन्यस्य वाजिनो येन जना उभये भुञ्जते विशः॥ २.०२४.१०**

मेहनावतः- रससिञ्चकस्य। बृहस्पतेः- मेधाधिदैवतस्य। सुविदत्राणि- लाभभूताः। राध्या- संसिद्धयः। विभु- विभ्वः। प्रभु- प्रभ्वः। प्रथमम्- मुख्याः। वेन्यस्य- कमनीयस्य। वाजिनः- गतिमतो ब्रह्मणस्पतेः। इमा- एतानि। सातानि- धनानि। येन। उभये जना विशः- देवा मनुष्याश्च। अभ्युदयोन्मुखा निःश्रेयसोन्मुखाश्च। भुञ्जते- अनुभवन्ति ॥१०॥

**योऽवरे वृजने विश्वथा विभुर्महामु रण्वः शवसा ववक्षिथ।**
**स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु विश्वेदु ता परिभूर्ब्रह्मणस्पतिः॥ २.०२४.११**

यः। अवरे- अधमे। वृजने- वर्जितव्ये क्लेशे। महाम्- महान्तमृषिम्। विभुः। रण्वः- रमणः सन्। शवसा- बलेन। ववक्षिथ- वोढुमिच्छति। सः। ब्रह्मणस्पतिः। विश्वा ता- सर्वेषु तेषु। परिभूः- व्याप्तः सन्। सः- असौ। देवः- द्योतनशीलः। देवान् प्रति। पृथु- प्रभूततया। पप्रथे- प्रथामगमत् ॥११॥

**विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदापश्चन प्र मिनन्ति व्रतं वाम्।**
**अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नोऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम्॥ २.०२४.१२**

मघवाना- हे सम्पद्वन्तौ। युवोः- युवयोः। विश्वम्- सर्वं कर्म। सत्यम्- अवितथम्। वाम्- युवयोः। व्रतम्- धर्मम्। आपः- मूलशक्तिधाराः। चन प्र मिनन्ति- न हिंसन्ति। इन्द्रब्रह्मणस्पती। युजेव

Dr Rangaji

WEBOLIM

वाजिनौ- युक्ताविवाश्वौ। अन्नमिव। नः- अस्माकम्। हविः- हव्यम्। अच्छ- अभिलक्ष्य। जिगातम्- आगच्छतम्॥१२॥

**उताशिष्ठा अनु शृण्वन्ति वह्नयः सभेयो विप्रो भरते मती धना।**
**वीळुद्वेषा अनु वश ऋणमाददिः स ह वाजी समिथे ब्रह्मणस्पतिः॥ २.०२४.१३**

उत- अपि च। अशिष्टः- क्षिप्रगतयः। वह्नयः- बृहस्पतेर्वोढारः। अनु शृण्वन्ति। सभेयः- सभ्यः। विप्रः- मेधावी। मती- मत्या। धना- ध्यानभावनादिहव्यानि। भरते। वीळुद्वेषाः- दृढपर्वतोपलक्षितजडबाधकः। वशा अनु- यथाभिलषितम्। ऋणम्। आददिः- व्यपोहयति। सः- असौ। ब्रह्मणस्पतिः। समिथे- सङ्गतौ। वाजी- शोभनगतिर्भवति॥१३॥

**ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावशं सत्यो मन्युर्महि कर्मा करिष्यतः।**
**यो गा उदाजत्स दिवे वि चाभजन्महीव रीतिः शवसासरत्पृथक्॥ २.०२४.१४**

महि- महत्। कर्म करिष्यतः। ब्रह्मणस्पतेः- मेधाधिदैवतस्य। सत्यः- अवितथः। मन्युः। यथावशम्। अभवत्। स जितक्रोध इति भावः। यः। गाः- चिद्रश्मीन्। उदाजत्- उदगमयत्। सः। दिवे- आत्मसूर्याय। अभजत्- सम्भक्तानकरोत्। महीव रीतिः- महत्य आपो मूलशक्तिधारा इव। शवसा- स्वबलेन। पृथक्। असरत्॥१४॥

**ब्रह्मणस्पते सुयमस्य विश्वहा रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।**
**वीरेषु वीराँ उप पृङ्धि नस्त्वं यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम्॥ २.०२४.१५**

ब्रह्मणस्पते- मेधाधिदैवत। विश्वहा- सर्वेष्वहःसु। सुयमस्य- सुनियमितायाः। वयस्वतः- हव्यभूतायाः। रायः- दानयोग्यसम्पदः। रथ्यः- अधिपतयः। स्याम- भवेम। त्वम्। नः- अस्मान्। वीरेषु वीरान्। उप पृधि- कुरु। ईशानः- वशी सन्। मे- मम। हवम्- आह्वानं प्रति। ब्रह्मणा- मेधया मन्त्रेण वा। वेषि- कामयसे॥१५॥

Dr. Rangan

WEBOLIM

**ब्रह्म॑णस्पते॒ त्वम॒स्य य॒न्ता सू॒क्तस्य॑ बोधि॒ तन॑यं च जिन्व।**

**विश्वं॒ तद्भ॒द्रं यदव॑न्ति दे॒वा बृ॒हद्व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑॥ २.०२४.१६**

पूर्वं व्याख्यातम् (२.२३.१९) ॥१६ ॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM